Experiences of Divinity by childhood friend Madhusudan Sutr :

He being 15 years elder to Thakur Ji, shared his first meeting with Thakur ji, when he was just 5 years old. How on the basis of your Bhav alone you can make him your own.

As the Video link of experices is in Oriya Language, its Hindi Transcription is as follows :

प्रश्न : सबसे ज्यादा सुन्दर मुहूर्त कब मिला। कुछ खटट्रा कुछ मीठा !

उत्तर : मैं जबसे उनके पास हूँ तबसे सारे मुहूर्त अच्छे हैं। मैं जब छोटा था, गांव में काम करता था। ठाकुर जी मेरे से 15 साल छोटे हैं। मैं घर पर छोटे कृष्ण के तस्वीर की पूजा करता होता था। एक दिन उसी तस्वीर में मैंने इनकी छवि देखी !

एक दिन जब मैं गांव में काम कर रहा था, तो मैंने एक छोटे से बालक को देखा, जिसकी झलक मुझे तस्वीर में मिली थी। वह मुझे बहुत प्यारा लगा। मन में यह भाव आया कि इनहें मैं अपने घर ले जाऊ। उस रात जब मैं सोया तो सपने में वही बालक कान्हा के रुप में मुकुट धारण कर मुझे मेरे घर के आंगण में नाचता नजर आया। मैंने उनहे बहुत बार गोद में भी उठाया।

मुझें इनके नाम का पता नहीं था, घर का भी पता नहीं था। मैंने उनहें बहुत ढूंढने की कोशिश की, फिर कुछ दिन के बाद जब मैं अपने काम पर था तब मुझें वे फिर नजर आए। पास में काम करते रतनाकर भाई से मुझे इनके घर का पता मिला और पता चला कि यह यदुनाथ का पुत्र है। मैंने रतनाकर को बताया कि मैं इनके घर जाऊगा और कुछ बातें करुंगा।

इनके साथ यह मेरी प्रथम भेंट थी, तब इनकी उम्र 5 वर्ष थी। मैंने उनहें बहुत दिन गोद में खिलाया है। यह श्री कृष्ण की तरह नाच करते थे और मटक - मटक कर चलते थे। मेरे मन में भी ऐसे भाव आते थे कि मैं इनको अपने साथ रख लूँ, घुमाऊ, फिराऊ आदि। यह जो कपडे पहनते थे, उनमें बहुत सुन्दर दिखते थे। यह सब बचपन की कहानी है।

प्रश्न : आपको इतने साल ठाकुर जी के साथ हो गए। पिछली बातों को लेकर और अब की बातों को लेकर आपने क्या महसूस किया?

उत्तर : मैंने अपना घर छोड दिया है। अब यहीं 'आश्रम' में रहता हूँ। सारे उडिसा में जो यज्ञ ओर सतसंग केन्द्र हैं, मैं सभी में घूमा हूँ। ..... मैं हमेशा उनके पास बैठता था और सुख और दुख के बारे में हमारी बातें होती थी।

प्रश्न : जो आजकल नए भाई लोग आ रहे हैं। आप कुछ उनके लिए बताए जो उनको ठाकुर जी के बारे में पता चले।

उत्तर : इसी तरह का अपनत्व का भाव लाना पडेगा। इस तरह का भाव नहीं होगा तो वह पकड में नहीं आएगें। वह तो भावग्राही हैं। अन्तर से भाव देना होगा, तब जाकर कुछ होगा। अगर आप लोगों का भाव नहीं होता तो आपको आज दर्शन नहीं मिल पाते!! आप उनके पास कैसे गए? वह पूर्ण रुप से तो अपने आप को ढक कर रखते है, और बात भी नहीं करते हैं। अन्दर में भाव थे इसीलिए आप लोगों के दर्शन हुए। वह तो भावग्राही हैं। उनको तो हम संसार से कुछ दे नहीं पायेंगें। वह तो सिर्फ भाव चाहते हैं। भाव के ज़रिये से कुछ भी दिखा सकते हैं। उनका खाद्य ही भाव है, और कुछ नहीं!! उनको क्या देंगें हम लोग। वह तो विश्व का मालिक है। इस सृष्टि में सब कुछ हमारे लिए ही तो रखे हैं!!

प्रश्न : ठाकुर जी ने अपने लिए क्या रखा हुआ है?

उत्तर : उनके लिए भाव हैं। वह तो भावग्राही हैं। भाव चाहते हैं। भाव हो जायेगा तो वह अति अपने से हो जायेंगे। आप जहां पर भी होगें, वह वहीं पर चले आयेगें। वहीं पर दर्शन हो जायेगा।